

भास संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे। इनके जीवन काल के विषय में अधिक जानकारी नहीं मिलती है। 'स्वप्नवासवदत्ता' उनके द्वारा लिखित सबसे प्रसिद्ध नाटक है। कालिदास रचित 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में भास का उल्लेख होने से इनका समय कालिदास से पूर्व निर्धारित किया जाता है। कुछ अंतरंग एवं बहिरंग प्रमाणों के आधार पर भास का काल ई०पू० चतुर्थ शताब्दी निर्धारित होता है। टी० गणपति शास्त्री उनका समय तृतीय शताब्दी ई०पू० मानते हैं।

**भास के (13) नाटक**— महाकवि भास के 13 प्रसिद्ध नाटक हैं। रामायण, महाभारत तथा पुराण साहित्य उपजीव्य काव्य रहे हैं। महाकवि भास ने इन सभी स्रोतों से कथानक लेकर अपने नाटकों की रचना की है, जिनका विवरण निम्नलिखित प्रकार से हैं—

- (क) रामकथाश्रित— (1) प्रतिमा नाटक (2) अभिषेक नाटक
- (ख) महाभारताश्रित—(3) पंचरात्र (4) मध्यम व्यायोग (5) दूतघटोत्कच (6) कर्णभार (7) दूतवाक्य (8) उरुभंग
- (ग) पुराण कथाश्रित—(9) बालचरित
- (घ) उदयनकथाश्रित—(10) प्रतिज्ञायौगन्धरायण (11) स्वप्नवासवदत्ता
- (ङ) कल्पित रूपक— (12) अविमारक (13) चारुदत्त

**इन रूपकों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है—**

**(1) प्रतिमा नाटक—** इस नाटक में सात अंकों में राम के वनवास को लेकर रावण वध तक की कथा वर्णित है। अयोध्या के दिवंगत राजाओं की प्रतिमाएँ देवकुल में स्थापित की जाती थीं। ननिहाल से आते समय भरत ने अयोध्या के समीप देवकुल में स्थापित दशरथ की प्रतिमा को देखकर उनके निधन की बात को जान ली थी। इसी कारण इस रचना का नाम 'प्रतिमानाटक' पड़ा।

**(2) अभिषेक नाटक—** इसमें छः अंकों में किष्किंधाकाण्ड से युद्धकाण्ड तक की सम्पूर्ण कथा एवं राम के राज्याभिषेक का वर्णन है।

**(3) पंचरात्र—** इसमें तीन अंक हैं। यज्ञ की दक्षिणा के रूप में द्रोण ने दुर्योधन से पाण्डवों को आधा राज्य देने को कहा। शकुनि की सलाह पर दुर्योधन ने शर्त रखी यदि पाँच रात्रों में पाण्डव मिल जायेंगे तो मैं राज्य दे दूँगा। द्रोण के प्रयत्न करने पर पाण्डव मिल गए और उन्हें आधा राज्य प्राप्त हो गया। यह घटना कवि कल्पित है और महाभारत में नहीं मिलती।

**(4) मध्यम व्यायोग—** यह एकांकी रूपक है तथा व्यायोग है। मध्यम पाण्डव भीम द्वारा घटोत्कच से एक ब्राह्मणकुमार की रक्षा एवं पुत्र के रूप में घटोत्कच की पहचान और उसके माध्यम से पत्नी हिडिम्बा के मिलन का वर्णन है।

**(5) दूतघटोत्कच—** यह एकांकी रूपक है। अभिमन्यु वध के बाद श्रीकृष्ण घटोत्कच को दूत के रूप में धृतराष्ट्र और दुर्योधन के पास भेजते हैं और कहलवाते हैं कि पुत्र के निधन से जो दशा पाण्डवों की हुई, वही तुम्हारी भी होगी।

**(6) कर्णभार—** यह भी एकांकी है। इसमें कर्ण ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र को कवच—कुण्डल का दान देकर महादानी होने का यश प्राप्त करना है।

**(7) दूतवाक्य—** यह भी एकांकी है। इसमें महाभारत के युद्ध से पहले पाण्डवों को दूत बनाकर कौरवों के पास कृष्ण का जाना वर्णित है।

**(8) उरुभंग—** यह भी एकांकी है। भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध तथा भीम के द्वारा दुर्योधन की जंघा के भंग करने का वर्णन इस कृति में है। सम्पूर्ण संस्कृत नाट्यसाहित्य में एकमात्र यही नाटक दुःखान्त है।

**(9) बालचरित—** इसमें पाँच अंकों में श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर कंस के वध तक का वृत्तान्त निरूपित है।

**(10) प्रतिज्ञायौगन्धरायण—** यह चार अंकों का नाटक है। इसमें कौशाम्बी के राजा उदयन कृत्रिम हाथी के छल से उज्जयिनी नरेश महासेन द्वारा पकड़ लिए जाते हैं। उदयन का मंत्री यौगन्धरायण दृढ़ प्रतिज्ञा करके न केवल उदयन को बन्धन से छुड़ाता है, अपितु कुमारी वासवदत्ता का भी हरण करा देता है।

**(11) स्वप्नवासवदत्ता—** यह छः अंकों का नाटक है। यह प्रतिज्ञायौगन्धरायण का उत्तरार्द्ध है तथा भास की नाट्यकला का चूड़ान्त निदर्शन है। इसमें मन्त्री यौगन्धरायण वासवदत्ता के जलने की अफवाह फैलाकर उसे छद्म वेष में पद्मावती के पास रख देता है। कालान्तर में पद्मावती का विवाह उदयन से होता है। कुछ दिनों बाद उदयन स्वप्न में वासवदत्ता को देखकर उसे जीवित समझने लगता है और उसे प्राप्त करने की अभिलाषा करता है। इसी कारण इस नाटक का नाम 'स्वप्नवासवदत्त' है। वत्सदेश पर उदयन की विजय के बाद वासवदत्ता उसे प्राप्त हो जाती है।

**(12) अविमारक**— छः अंकों के इस नाटक में राजकुमार अविमारक और राजकुमारी कुरङ्गी के बीच प्रणय एवं परिणय का वर्णन है।

**(13) चारुदत्त**— इसमें चार अंक हैं। यहाँ निर्धन किन्तु उदार चेता ब्राह्मण चारुदत्त और गुणग्राहिणी वारांगना वसन्तसेना का आदर्श प्रेम चित्रित है। 'मृच्छकटिक' रूपक इसी पर आधारित है। यह नाटक अपूर्ण है। इसमें भरत वाक्य भी नहीं है। सम्भवतः यह नाटक भास की अंतिम कृति है।

**भास की नाट्यकला**— भास की सभी रचनाएँ नाटकीय दृष्टि से अत्यन्त सफल हैं। यद्यपि कथानक के लिए वे उपजीव्य काव्यों (रामायण, महाभारत एवं पुराणों) पर आश्रित हैं परन्तु अपनी अद्भुत कवित्व शक्ति से उसमें यथोचित परिवर्तन कर आकर्षक बना दिया है। यथा— पंचरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच की कथावस्तु कल्पित हैं, यद्यपि इनके पात्र महाभारत से लिए गये हैं। इनके **कथानक** घटना प्रधान एवं अन्तर्द्वन्द्व से युक्त हैं। अपने वर्णन—चातुर्य एवं नाट्य—नैपुण्य द्वारा भास अनुपस्थित पात्रों या परोक्ष घटनाओं को भी, दर्शकों के मन में उनकी उपस्थिति का आभास करा देते हैं। जैसे प्रतिज्ञायौगन्धरायण में उदयन एवं वासवदत्ता रंगमंच पर कभी नहीं आते पर सामाजिकों को अपनी उपस्थिति का सदैव आभास कराते रहते हैं।

भास के नाटकीय **संवाद** बड़े रोचक हैं। उनके पात्र समुचित बातें थोड़े से चुने हुए शब्दों में करते हैं। पात्रों के चरित्र चित्रण में भी भास बहुत निपुण हैं। अपने पौराणिक पात्रों को उन्होंने वास्तविकता, मनोवैज्ञानिकता और मार्मिकता के साथ चित्रित कर उन्हें सर्वथा नवीन और प्रभावोत्पादक बना दिया है। शिष्ट एवं परिष्कृत हास्य के पुट के कारण ही 'भासो हासः' की उक्ति उनके विषय में प्रचलित है। भास उत्कृष्ट कवि हैं, किन्तु अपने कविता को वे अपनी नाटकीयता पर हावी नहीं होने देते। इस प्रकार भास के नाटकों में घटना की गतिशीलता, चरित्र चित्रण की सजीवता, अभिनय की प्रभावोत्पादकता, संवाद की चमत्कारिता और रसों की आह्लादक निष्पत्ति पाठकों एवं दर्शकों को मुग्ध कर देने में अत्यन्त सफल है। अतः आज भी इनके नाटक रंगमंच पर सफलता से खेले जाते हैं।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा अर्थान्तरन्यास इनके प्रिय अलंकार हैं। अर्थान्तरन्यास अलंकार के उदाहरण के रूप में निम्नलिखित पद्य अत्यन्त लोकप्रिय हैं—

पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासीच्छ्लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।  
कालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः॥

(स्वप्नवासवदत्ता 1/4)

भास की भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रवाहपूर्ण तथा घटना—प्रवर्तन के अनुरूप है। इसीलिए उनके नाटक सर्वप्रिय हैं। शृंगार रस के वर्णन में कोमलकान्त पदावली प्रयुक्त होने के साथ वीर रस के वर्णन में कवि ने कठोर पदों का भी प्रयोग किया है। फिर भी कवि की रुचि शब्दों की सरलता में मृदुता में ही है।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य के प्रथम नाटककार होते हुए भी अपनी उत्कृष्ट नाट्यकला और अनुपम रचना शैली के माध्यम से भास ने उत्कृष्टता प्राप्त की है।

**भास शैली**— भास अपने नाटकों की कथावस्तु के लिए ही वाल्मीकि एवं व्यास के ऋणी नहीं हैं, अपितु नैसर्गिक रचना शैली की दृष्टि से भी उनके अनुगामी है। इनके नाटकों में पदविन्यास के साथ भाव—सौष्टव और कथा—प्रवाह भी मनोरंजक है। माधुर्य एवं प्रसाद गुण इनकी भाषा शैली की विशेषता है। भास का प्रकृति—चित्रण भी सरस, स्वाभाविक एवं मनोरम है, इन्होंने बाह्य प्रकृति को भी अन्तःप्रकृति के अनुरूप ही चित्रित किया है। प्रकृति के प्रति अत्यन्त प्रेम के कारण भास अपनी उपमाओं के लिए प्रकृति से ही प्रायः उपादान ग्रहण करते हैं। यथा—

सूर्य इव गतो रामः सूर्य दिवसो इव लक्ष्मणोऽनुगतः।

सूर्यदिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता।। (प्रतिमानाटक 2/7)